बर्लिन का शिवा

प्रो. शिवा प्रकाश इस यात्रा की विशिष्ट उपलब्धि रहे। हैम्बर्ग में पहली शाम मुलाकात हुई तो वह अपनी कार से नीचे नहीं उतरे। मन से थोड़ा उतरने लगे। मगर अगली सुबह जब मिले तो लगा कहीं गहरे ही मन में उतरने लगा था वह शख्स। उसके बाद तो परतें खुलती गईं और इस अहसास ने मुझे समृद्ध बना दिया कि मैं एक ऐसे प्रबुद्ध यायावर की संगति में हूं, जिसकी अब तक की सारी ज़िन्दगी साहित्य, कला, संस्कृति पर बातें करते, जमकर लिखते और जमकर बोलते कटी है।

शिवा वैसे जेएनयू के 'स्कूल ऑफ ऑर्ट्स एंड एस्थैटिक्स' में प्रोफेसर हैं, मगर इन दिनों जर्मनी स्थित भारतीय दूतावास में 'टैगोर सेंटर' के निदेशक के रूप में प्रतिनियुक्ति (डेपुटेशन) पर हैं। अपने देश में कभी आध्यात्मिक दार्शनिकों, कभी अघोरियों तो कभी धुर वामपंथी वैचारिकों के साथ करीब से जुड़े शिवा अब तक लगभग दो दर्जन चर्चित पुस्तकें दे चुके हैं। मूलरूप से कन्नड़ हैं शिवा, लेकिन जिस बारीकी से वह मेरे पंजाब, हरियाणा के आंचल को जानते हैं, वह अद्‌भुत है।

संगीत नाटक अकादमी द्वारा पुरस्कृत इस शख्स का रंगमंच से जितना गहरा रिश्ता रहा है उतना ही रचनात्मक साहित्य से। उनके ब्रीफ़केस में उनका एक काव्य संकलन है 800 पृष्ठों का।

स्तरीय लेखन की एक सीमा होती है। शिवा असीम है। सामान्यत: कोई भी व्यक्ति एक साथ कन्नड़, तमिल, तेलुगू, हिन्दी, बंगला, उड़िया, संस्कृत व उर्दू का गहन विद्वान नहीं हो सकता, मगर शिवा वैसा ही है। उसने समकालीन आस्ट्रेलियन कवियों का भी कन्नड़ में अनुवाद किया है। वह मीडिया से भी जुड़ा है। प्रजावाणी, सीएनएन 'वेबसाइट' न्यू इंडियन एक्सप्रेस, दी टैलीग्राफ़, दी हिन्दू, पायनियर, टाइम्स ऑफ इंडिया आदि में वह निरंतर चर्चा में बना रहता है।

मैं जिस भी देश की बात करता हूं शिवा मुझे वहां के साहित्य, साहित्यकारों व समाज शास्त्र के बारे में पूरी तरह बताने लगता है।

थुलथुलापन, मगर लम्बा कद, कुर्ता व लम्बा पायजामा, सिग्रेट कमोबेश सदा साथ में (मगर औपचारिक समारोहों, रेल, बस, कार या होटल में नहीं) कुल मिलाकर वह किसी आध्यात्मिक मठ का महन्त लगता है, मगर जब बात करता है तो लगता है आदिशंकराचार्य, कार्लमार्क्स, हीगेल, शेक्सपीयर, कालिदास आदि सभी की आत्माएं उसके ज़ेहन में एकसाथ उतर आई हैं।

लोक संस्कृति, भाषा विज्ञान, योग, थियेटर, भक्ति-सूत्र, वेदभाष्य, मार्क्सवाद, अस्तित्ववाद सभी पर वह पूरी सहजता से बात करता है। वह संस्कृत पढ़ाता भी रहा है और संस्कृत नाटकों के मंचन में भी शरीक रहा है। दलित कविता पर उसका विशेष अध्ययन व लेखन है।

इतने विशाल कैनवस पर काम करने वाला व्यक्ति स्वाभाविक रूप में विवादों में भी घिरेगा, संकटों को आमंत्रण भी देगा।। उसकी निजी ज़िन्दगी भी कडुवाहटों से भरी है लेकिन दोस्तों के लिए वह खुली किताब है। मैं इसी बात पर चकित हूं कि कोई भी व्यक्ति एक ही ज़िन्दगी में इतने व्यापक विषयों को कैसे आत्मसात कर सकता है।

हैम्बर्ग से हार्ले, हिटट्न बर्ग, हाईबल बर्ग और बर्लिन तक उसके साथ बिताए लम्हे मेरे लिए अविस्मरणीय बन गए हैं। अवधूत, अघोरी, योगी, अध्यात्मगुरु, कामरेड, रेकी-गुरु, नाटककार, कवि, अनुवादक, चिंतक, बहु भाषाविद, संगीतकार, शिक्षक, क्या-क्या हो तुम शिवा! काश कि तुम्हें वे सुख भी मिल पाते जिनके तुम सुपात्र हो! मगर इतने दुर्गम व विसंगत रास्तों से जो कोई भी गुज़रेगा उसे निर्वाण के लिए तपना तो पड़ेगा ही।

शिवा अब वापिस लौटने पर आमादा हैं, उसे लगता है बहुत कुछ है जो उसे अभी लिखना है, जीना है।

उसने अब तक जितना जिया है, भोगा है, पढ़ा है, लिखा है और दर्जनों सेमिनारों में प्रस्तुत किया है, उस सब को ढोकर भी वह संतुलित है और सभ्याचारों व संवेदनाओं के धरातल पर सधी हुई बातें कर सकता है, यह उपलब्धि कम तो नहीं।